Tender Heart High School, Sector-33-B, Chandigarh.

कक्षा - दसवीं

विषय - हिन्दी साहित्य

शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक : एकांकी संचय

पाठ - 6 'दीपदान' (एकांकी) लेखक- डॉ० रामकुमार वर्मा

सुप्रभात प्यारे बच्चो !

आज हम कक्षा दसवीं की हिन्दी साहित्य की पाठ्य-पुस्तक 'एकांकी संचय' की पृष्ठ संख्या 82 पर दिए पाठ - 6 'दीपदान' नामक एकांकी का अध्ययन करेंगे।

'दीपदान' एकांकी में वीरांगना पन्ना धाय के अभूतपूर्ण बलिदान का चित्रण है। महाराणा साँगा की मृत्यु के बाद उनका पुत्र राजसिंहासन का उत्तराधिकारी था, पर वह अभी केवल चौदह वर्ष का था इसलिए महाराणा साँगा के भाई पृथ्वीराज के दासी पुत्र बनवीर को राज्य की देखभाल के लिए नियुक्त किया गया। धीरे-धीरे बनवीर राज्य को पूरी तरह हड़प लेने की योजना बनाने लगा। उसने एक रात्रि में दीपदान के आयोजन के बहाने नृत्य का आयोजन करवाया तथा प्रजाजनों को इस नृत्य में व्यस्त रखकर कुँवर उदय सिंह की हत्या की योजना बनाई। परन्तु कुँवर की संरक्षिका धाय माँ (पन्ना) को बनवीर के इस षड़यन्त्र का पता चल गया। पन्ना बनवीर के इस षड़यन्त्र को सफल न होने देने के बारे में सोचने लगी।

बच्चो अब हम एकांकी को पृष्ठ संख्या 101 से पढ़ना व

समझना आरंभ करेंगे। सामली पन्ना से पूछती है कि बनवीर यहाँ आकर कुँवर के बारे में पूछेगा तो तुम क्या उत्तर दोगी और यदि तुम कोई उत्तर नहीं दोगी तो उनके द्वारा कुँवर जी की खोज की जाएगी, यदि कुँवर नहीं मिलेंगे तो वह (बनवीर) तुम्हारी हत्या कर देंगे तो आपके जीवित न रहने के उपरान्त कुँवर जी भी जीवित न रह पाएँगे। पन्ना कहती है कि मैं उससे कुँवर उदय सिंह के लिए अपने प्राणों की भिक्षा माँगूगी जो चित्तौड़ की किसी नारी ने नहीं माँगी होगी क्योंकि राजपुतानी वीर होती हैं। वे अपने प्राणों की भिक्षा नहीं माँगती लेकिन मैं कमज़ोर बनूँगी क्योंकि मुझे कुँवर उदय सिंह को संभालना है, वही आगे जाकर इस राज्य को संभालेंगे।

सामली बताती है कि बनवीर राक्षस बन गया है। उसके सिर पर कुँवर को मारने का खून सवार हो गया है। वह तुम्हारी भिक्षा को सुनने वाला नहीं है। कुँवर जी को न पाकर वह अवश्य तुम्हें मार डालेगा और कुँवर जी को तुम्हारे बिना रहने की आदत नहीं है। अतः तुम्हारा यह बलिदान किसी काम नहीं आएगा। कुँवर जी का चित्तौड़ को संभालने के लिए जीवित रहना ही चाहिए। पन्ना को सामली की बातों से अहसास होता है और वह सोचती है कि कुँवर जी तो थोड़ी-सी बात पर रूठ जाते हैं। मेरे बिना वे कैसे रहेंगे? पन्ना एक बार फिर मुसीबत में फँस जाती है। वह जानती थी कि कुँवर उसे न देखकर बेहाल हो जाएँगे तब पन्ना इस समस्या का समाधान खोजते हुए निर्णय लेती है और सामली से कहती है कि वह कुँवर जी की शैया पर किसी और को लिटा देगी। बनवीर क्रोध में अंधा होगा, पहचान नहीं पाएगा कि यहाँ कौन सोया है।

सामली पन्ना से पूछती है लेकिन किसे सुलाओगी? यह सुनकर पन्ना कहती है कि यह बताते हुए मेरे हृदय

में बिजली गिर रही है। मेरी आँखों में प्रलय के बादल घुमड़ रहे हैं। मुझे शरीर के प्रत्येक रोम से बिजली के गिरने का दर्द महसूस हो रहा है। वह अपनी आँखों के तारे चंदन को कुँवर की शैया पर सुलाने का कठोर निर्णय ले लेती है। वह रोते हुए कहती है कि कुँवर की रक्षा के लिए अपने नन्हे पुत्र को बनवीर की तलवार के नीचे रख देगी जिससे उसकी रक्त की प्यास शांत हो जाएगी। मैं बनवीर से कह दूँगी कि बेचारा बालक है अतः इसके सीने पर धीरे-से वार करना। भीषण प्रहार से मेरा पुत्र जाग जाएगा। पन्ना की यह बात सुनकर सामली उन्हें यह सब करने तथा कहने के लिए मना करती है और कहती है कि धाय माँ ऐसा मत करना, मैं ऐसा न सुन सकूँगी। पन्ना की बात सुनकर सामली दुःखी होती है और वह वहाँ से चली जाती है।

सामली के जाने पर धाय माँ स्वयं से कहती हैं कि जो मुझे करना है, सामली तो उसके बारे में सुनना भी नहीं चाहती। वह भवानी माँ से शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करती है कि मैं राजवंश की रक्षा में अपना रक्त दे सकूँ। यही राजपुतानी का सम्मान है, धर्म है। वह यह भी प्रार्थना करती है कि मेरे हृदय में ममता के स्थान पर पत्थर रख दो ताकि मैं चित्तौड़ की सच्ची वीरांगना बनूँ। मेरे रक्त से अर्थात् पुत्र के बलिदान से चित्तौड़ के राजवंश के अंतिम उत्तराधिकारी की रक्षा हो सके। इस प्रकार पन्ना धाय अपने पुत्र का बलिदान देकर अपनी स्वामिभक्ति का कर्त्तव्य पूरा करना चाहती है।

सामली के जाने के बाद नेपथ्य में चंदन का स्वर सुनाई पड़ता है। चंदन प्रवेश करता है। चंदन अपनी माँ को बताता है कि उसके पैर में चोट लगी है और रक्त निकल रहा है।

पन्ना चंदन के चोट लगी देखकर रो पड़ती है। चोट लगने का कारण पूछने पर चंदन माँ को बताता है कि जब मैं भोजन करके उठा तभी सज्जा (खाना बनाने वाली) ने बताया कि महल को चारों तरफ़ से सिपाहियों ने घेर लिया है तो मैंने खिड़की पर चढ़कर देखा लेकिन अंधेरे के कारण मुझे कुछ दिखाई नहीं दिया और नीचे उतरते समय एक टूटा हुआ शीशा उसके अंगूठे में चुभ जाता है।

चंदन को अपनी चोट की परवाह नहीं है। वह केवल यह जानना चाहता है कि आखिर महल को सिपाहियों द्वारा क्यों घेरा जा रहा है।

पन्ना चंदन को सच्चाई न बताकर उसकी बात को टालते हुए कहती है कि आज सब उत्सव में नाच-रंग देखने आए होंगे अथवा सोना ने उन्हें अपना नाच दिखाने के लिए बुलाया होगा।

चंदन के अनुसार सोना अच्छी लड़की नहीं है। वह कुँवर जी को भी उनके मार्ग से भटका रही है। इसलिए वह माँ से कहता है कि वह सोना को समझाएगा कि कुँवर को नाच दिखाकर भटकाया न करे ताकि उनका मन शिकार करने में और वीरतापूर्ण कार्य करने में लग सके। वह यह भी कहता है कि सोना ने उन्हें रूठना भी सिखा दिया है। अर्थात् सोना के कारण उनके व्यवहार में बदलाव आ गया है और अब वे साथ में न खेल पाते हैं, न खा पाते हैं। चंदन से भी आज अकेले कुछ खाया नहीं गया। पन्ना कहती है तो चलो, मैं तुम्हें जी-भर खिला दूँ।

चंदन नहीं जानता कि उसके लिए कल आने वाला नहीं है। वह माँ से कहता है कि कल तुम मुझे परोस-परोसकर खिलाओगी तो मैं कुँवर जी से भी ज्यादा खा लूँगा और उन्हें दिखा दूँगा कि मैं उनसे ज्यादा खा सकता हूँ।

पन्ना चंदन से बात तो कर रही है। चंदन का बलिदान देने का त्याग सोचकर वह दुःखी होती है कि कल चंदन तो होगा ही नहीं तो वह खाना किसे खिलाएगी और उसकी आँखों में आँसू आ जाते हैं। चंदन के पूछने पर पन्ना रोने का कारण बताती है कि तुम्हारे अंगूठे से खून बहने के कारण वह रो रही है।

चंदन अपनी माँ से भविष्य की योजना बताते हुए कहता है कि मैं वीरता से बहुत-सी जागीरें जीत जाऊँगा तो उन जागीरों से मैं तुम्हारे लिए एक मंदिर बनवाऊँगा और उस मंदिर में देवी के स्थान पर तुम्हें बिठाऊँगा और तुम्हारी पूजा करूँगा। चंदन अपनी माँ से कहता है कि तुम यह मत समझना कि तुम्हारा पुत्र कमज़ोर है, केवल बात बना रहा है। मैं जागीरें जीत सकता हूँ और जंगली खरगोश की तरह तेज़ भी दौड़ सकता हूँ। पन्ना, चंदन को सुलाने का प्रयत्न करती है। तभी दरवाज़े पर कुछ आहट होती है। पन्ना, चंदन को खतरे का अहसास नहीं होने देना चाहती, इसलिए वह कहती है कि कीरत बारी भोजन की जूठी पत्तलें उठाने आया होगा। चंदन के हौंसले बुलंद हैं अतः वह अपनी माँ से पूछता है कि यदि कोई और है तो क्या मैं अपनी तलवार ले आऊँ। पन्ना देखकर लौटती है और चंदन को बताती है कि महल में किसी बात की चिंता नहीं है। तुम आराम से सो जाओ। चन्दन माँ से पूछता है कि मैं कहाँ सोऊँगा क्योंकि सज्जा तो अभी काम समाप्त करके आई न होगी, मेरी शैया तो उसने ठीक न की होगी। पन्ना यही चाहती थी इसलिए वह कहती है कि तुम कुँवर जी की शैया पर सो जाओ। बिस्तर ठीक हो जाने पर मैं तुम्हें तुम्हारी शैया पर सुला दूँगी। चंदन के यह पूछने पर कि उनकी शैया पर सो जाने से कुँवर जी बुरा तो नहीं मान जाएँगे तो पन्ना उसे समझाती है कि तुम्हारे थोड़ी देर के

लिए सो जाने पर कुँवर जी की शैया मैली नहीं हो जाएगी। मैं कुँवर जी को समझा दूँगी। चंदन प्रसन्न हो जाता है। वह अपनी माँ से कहता है कि मैं अब राजकुमार बन गया। पर मेरे गले में राजकुमारों जैसी माला नहीं है फिर वह अपनी माँ से पूछता है कि क्या आपने मेरी टूटी माला गूँथ दी है?

पन्ना उसे परिस्थितियों के बारे में न बताकर उससे कहती है कि सामली के आ जाने के कारण वह तुम्हारी माला गूँथ न पाई। चंदन कुँवर की नरम शैया पर सो जाता है उसे लगता है कि वह सदा इसी शैया पर ही सोता रहे। अर्थात् उसकी नींद ही न खुले। पन्ना यह सुनकर चौंक उठती है। उसके हृदय में काँटों के समान कुछ चुभ रहा है। वह चंदन से कहती है कि तुम सो जाओ तो मैं भी सो जाऊँगी। आज मेरी तबीयत कुछ ठीक नहीं है।

जब चंदन वैद्य के पास जाने की बात करता है तो पन्ना कहती है कि वैद के पास भी इस दर्द की दवा नहीं है क्योंकि पन्ना का दर्द अपने पुत्र का बलिदान करना था। यही दर्द उसके हृदय में शूल के समान चुभ रहा था। माँ की आज्ञा मानकर चंदन सोने लगता है। पन्ना उसे कहती है कि तुम अपनी मातृभूमि के वीरों की कहानियों को सोचते - सोचते सो जाओ कि उन्होंने अपनी मातृभूमि के लिए अपना बलिदान दिया और चित्तौड़ का नाम रोशन किया। वह उसे यह बताना चाहती है कि वीरता बलिदान या कुर्बानी माँगती है। वह बताती है कि बप्पा रावल के द्वारा ही मेवाड़ का निर्माण हुआ था। उन्होंने ही दूसरे राज्यों पर आक्रमण कर चित्तौड़ को इतना बड़ा बनाया। उन्होंने ही सबसे पहले अपने आराध्य एकलिंग (शिव) का मंदिर बनवाया था। राजा नरवाहा जिन्होंने अपनी अकेली शक्ति से अनेक शत्रुओं को पराजित किया। राजा हंसपाल ने अनेक राज्य जीतकर अपने राज्य में मिलाए।

रावल सामंत जिन्होंने गुजरात के सोलंकी राजा उदयपाल को युद्ध में पराजित किया। इसी प्रकार रावल जयसिंह, रावल अमर सिंह जैसे कई वीर हुए।

पन्ना चंदन को इन वीरों के बारे में इसलिए बताना चाहती है क्योंकि चंदन में भी वीरता और बलिदान की भावना पैदा हो सके। माँ की बातें सुनकर चंदन की आँख लग जाती है। उसे एक झलक में महसूस होता है कि कोई है जो काली छाया के समान उसके पास आकर उसे मारने के लिए तलवार उठा रही है। पन्ना अपने पुत्र को सांत्वना देते हुए सो जाने के लिए कहती है। चंदन अपनी माँ की बात मानकर उन्हें गीत सुनाने के लिए कहता है। पन्ना करुणा से भरे स्वर में गीत गुनगुनाने लगती है। चंदन के सो जाने पर वह स्वयं को रोक नहीं पाती और ज़ोर से रो पड़ती है। वह दुःखी मन से स्वयं से कहती है कि मैंने अपने पुत्र को ऐसे सुला दिया कि वह फिर नहीं उठेगा। पन्ना को लगता है कि उसने अपने भोले पुत्र के साथ छल किया है। उसे (चंदन को) कुँवर की शैया पर सोने का लालच देकर उसे मृत्यु की शैया पर सुला दिया। वह स्वयं की तुलना सर्पिणी से करती है जो अपने ही बच्चे को मार कर खा जाती है। उसी प्रकार वह अपने पुत्र को मारने के लिए यहाँ लेकर आई है। इस संसार में मुझ जैसी माँ का जन्म होना था जो जानबूझ कर अपने ही पुत्र का बलिदान दे रही है। पन्ना सोए चंदन को संबोधित करते हुए कहती है कि मैं तुम्हारी माला गूँथ न सकी वह पूरी कैसे हो सकती है क्योंकि तुम्हारा तो जीवन ही अधूरा रह गया। आज तुम्हारा अंतिम दिन है और मैं तुम्हें भोजन भी न करवा सकी। कल तुम कुँवर के साथ भोजन नहीं कर पाओगे। पन्ना अपने पुत्र की आशाओं को, भविष्य में संजोए सपनों को दोहराते हुए रोती है।

वह कहती है कि तुम जागीरें जीतकर मेरा मंदिर बनवाओगे और मेरी पूजा करोगे लेकिन मैं तो ऐसी देवी हूँ जो अपने भक्त का ही अर्थात् जो उसी की पूजा करना चाहता है, उसी का अंत कर रही हूँ। तुम्हारे अंगूठे से बहने वाली रक्त की धारा तो मैंने रोक लिया लेकिन अब तुम्हारे हृदय से जो रक्त की धारा बहेगी, उसे मैं कैसे रोक पाऊँगी। वह उसे कहती है कि तुम अपनी रक्त की धारा को मातृभूमि पर चढ़ा दो अर्थात् अपना जीवन मातृभूमि के लिए कुर्बान कर दो क्योंकि तुम्हारे बलिदान से कुँवर सुरक्षित रहेंगे और चित्तौड़ के भविष्य को उज्ज्वल बनाएँगे।

पन्ना चंदन का सोया हुआ मुख देखकर कहती है कि आज मैंने भी दीपदान किया है। इससे पहले दीपदान बनवीर के कहने पर चित्तौड़ की स्त्रियों ने तुलजा भवानी के सामने मयूर पद्म कुंड में किया था। आज मैं अपने जीवन के दीपक का दान कर रही हूँ और उसे कुंड में न बहाकर रक्त की धारा पर तैरा रही हूँ। मेरे जैसा दीपदान किसी ने नहीं किया है। स्वयं ही अपने पुत्र को मृत्यु के हाथों सौंपते समय एक ओर पन्ना के मन में पुत्र प्रेम उमड़ रहा था तो दूसरी ओर उसका कर्त्तव्य उसे राजवंश की रक्षा करने में अपने पुत्र के प्राणों का बलिदान देने के लिए प्रेरित कर रहा था। पन्ना अपने भोले-भाले पुत्र का आखिरी बार मुख देखकर सिसकियाँ लेने लगती है।

• सभी छात्र इस एकांकी को पृष्ठ संख्या 106 तक पुनः पढ़ेंगे एवं समझने का प्रयास करेंगे।

गृहकार्य

निम्नलिखित अवतरण पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखो :-

" अन्नदाता ! प्यार कहने में जबान पर कैसे आए ? वो तो दिल की बात है। मौके पे ही देखा जाता है और कहने को तो मैं कही चुका हूँ कि उनके लिए अपनी

कक्षा - दसवीं शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा
विषय- हिन्दी साहित्य (पाठ- ६ 'दीपदान')

जान तक हाजिर कर सकता हूँ।"

प्रश्न (i) वक्ता और श्रोता कौन-कौन हैं, दोनों का परिचय दीजिए। वक्ता ने अन्नदाता शब्द का प्रयोग किसके लिए किया है ?

प्रश्न (ii) वक्ता ने श्रोता की कौन-सी बात सुनकर उपर्युक्त कथन कहा ?

प्रश्न (iii) वक्ता ने श्रोता की सहायता कब और कैसे की ?

प्रश्न (iv) पन्ना ने कुँवर उदयसिंह के प्राणों की रक्षा किस प्रकार की ?

धन्यवाद।

[अंतिम पृष्ठ]